AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

विकसित भारतः यथार्थ एवं संभावनाएँ

ORIGINAL ARTICLE

Author
जितेन्दर कुमार राणा
शोधार्थी (जे.आर.एफ.)
स्नातकोत्तर भूगोल विभाग
विनोबा भावे विश्वविद्यालय
हजारीबाग, झारखंड, भारत

शोध सार

विकास एक ऐसी अवधारणा है जो लोगों की सामाजिक–आर्थिक स्थितियों में सुधार करने या जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने या मानव कल्याण और सामाजिक भलाई में वृद्धि करने का प्रयास करती है। वर्तमान में भारत एक विकासशील देशों की श्रेणी में आता है जो 2047 तक आजादी के 100वीं वर्षगांठ पर विकसित भारत के लिए दृढ़ संकल्प है और इस दिशा में प्रयासरत है। प्राचीन काल में भारत को दुनिया को मार्ग दिखाने व विभिन्न क्षेत्रों में मार्ग प्रशस्त करने हेतु विश्व गुरु की संज्ञा दी जाती थी। मुगल काल के दौरान भारत विश्व की दूसरी सबसे बड़े अर्थव्यवस्था थी किंतु ब्रिटिश शासन के दौरान भारत की अर्थव्यवस्था तबाह हो गई। हालांकि स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण से अर्थव्यवस्था में प्रगति हुई और आज भारत विश्व की पांचवीं सबसे बड़े अर्थव्यवस्था बन चुकी है। ऐसा अनुमान है कि 2030 तक भारत विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था होगी। इस शोध पत्र का प्रमुख उद्देश्य भारत के विकास की रूपरेखा के बारे में जानकारी प्राप्त करना, भारत के सामाजिक–आर्थिक–राजनीतिक तथा तकनीकी विकास की वर्तमान स्थिति जानना तथा एक विकसित भारत बनने के लिए आवश्यक क्षमताओं का पता लगाना है। प्रस्तुत शोध पत्र द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है। द्वितीयक आंकड़ों का संकलन राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय प्रकाशनो, शोध पत्रों, पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं, समाचार पत्रों तथा इंटरनेट इत्यादि के माध्यमों से की गई है। वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक विधियों से आंकड़ों का विश्लेषण किया गया है।

मुख्य शब्द

विकसित भारत, अर्थव्यवस्था, सामाजिक भलाई.

परिचय

हमारे देश को कई नाम से जाना जाता है जैसे भारत, हिंदुस्तान, इंडिया, आर्यावर्त। संस्कृत वांग्मय में भारतीय उपमहाद्वीप को प्राचीन राजा भारत के कारण इसे भारतवर्ष की संज्ञा दी जाती है। कुछ अन्य विद्वानों का विचार है कि यह नाम यहाँ पर रहने वाले भारथ आदिवासियों के नाम पर आधारित है जबकि 'इंडिया' शब्द की उत्पत्ति ग्रीक साहित्य से हुई है जिसका अर्थ इण्डोई की भूमि है। यह शब्दावली इण्डोस से ली गई है। लेटिन में इसे इण्डस कहते हैं। फारस एवं यूनानियों ने इसे सिंधु अथवा हिंदुस्तान के नाम से पुकारा क्योंकि यहाँ पर हिंदुओं का बाहुल्य था। 'हिंदू' शब्द की उत्पत्ति सिंधु से हुई है जिसका कारण यह था कि फारसी लोग 'स' को 'ह' का उच्चारण देते

थे। वर्तमान समय में इसे इंडिया या भारत या हिंदुस्तान कहा जाता है। मेगास्थनीज यूनानी राजदूत ने ई.पू. 'इंडिका' नामक ग्रन्थ लिखा था।

प्राचीन समय में भारत को विश्व गुरु कहा जाता था क्योंकि भारत की प्राचीन ज्ञान और यहाँ के लोगों का साहित्य, चिकित्सा विज्ञान, अर्थव्यवस्था एवं राजनीति बहुत समृद्ध था। भारत ने कई क्षेत्रों में अद्वितीय योगदान दिया तथा दुनिया को नया मार्ग दिखाया था। भारत को विश्व गुरु कहने के कुछ कारण थे जैसे भारत में दुनिया की पुरानी सभ्यता का विकास, वेदों का विकास, प्राचीन विद्वानों द्वारा गणित में योगदान, आर्यभट्ट और भास्कराचार्य का गणित में योगदान, शून्य और दशमलव प्रणाली जैसी अवधारणाओं का आविष्कार किया, चरक और सुश्रुत का चिकित्सा क्षेत्र में योगदान, आयुर्वेद के ग्रंथों में कई बीमारियों के इलाज जानकारी, भारत में संगीत और नृत्य के क्षेत्र में योगदान, भरत नाट्यम का विकास, अजंता और एलोरा की गुफाओं को देखने के लिए विदेशी पर्यटक आज भी बड़ी संख्या में आते हैं। महाकवि कालिदास की रचनाओं की ख्याति पूरी दुनिया में है, चाणक्य ने अर्थशास्त्र की रचना की थी, नालंदा जैसे विश्व विख्यात विश्वविद्यालय थे जहां पूरी दुनिया से विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करने के लिए भारत आते थे।

विकास एक बहुआयामी अवधारणा है और इसके विभिन्न पहलू हैं जैसे आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, पारिस्थितिक, नैतिक और संस्थागत आदि। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो लोगों की सामाजिक–आर्थिक स्थितियों में सुधार करने या जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने या मानव कल्याण और सामाजिक भलाई में वृद्धि करने का प्रयास करती है।

यू.एन.डी.पी. के अनुसार "विकास एक व्यापक आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक प्रक्रिया है जिसका उद्देश्य विकास में उनकी सक्रिय, स्वतंत्र और सार्थक भागीदारी के आधार पर पूरी आबादी और उसके सभी व्यक्तियों की भलाई में निरंतर सुधार करना है।" विकास को लोगों की सामाजिक और आर्थिक स्थिति में गुणात्मक परिवर्तन और मात्रात्मक वृद्धि की प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।

विकसित देश की अवधारणा

एक विकसित देश औद्योगीकृत होता है, उसके पास जीवन की उच्च गुणवत्ता होती है, एक विकसित अर्थव्यवस्था होती है और कम औद्योगीकृत देशों की तुलना में उन्नत तकनीकी बुनियादी ढांचा होता है जबकि विकासशील देश वे हैं जो औद्योगीकरण की प्रक्रिया में हैं या पूर्व–औद्योगिक और लगभग पूरी तरह से कृषि प्रधान हैं।

विकसित देशों के लिए कुछ संकेतक होते हैं जिनमें वे उच्च पायदान पर होते हैं। इन संकेतको में प्रति व्यक्ति आय, साक्षरता दर, मानव विकास सूचकांक, सकल घरेलु उत्पाद, शिशु मृत्यु दर, जन स्वास्थ्य, प्रौढ़ शिक्षा, निम्न बेरोजगारी दर, निम्न गरीबी दर, उन्नत विज्ञान और प्रौद्योगिकी, उच्च जीवन प्रत्यासा, अच्छा स्वास्थ्य, राजनीतिक स्थिरता, औद्योगिकरण, उच्च जीवन शैली इत्यादि।

वर्तमान समय में भारत विकासशील देशों की श्रेणी में आता है जो अपने निरंतर प्रयासों से विकसित देशों की श्रेणी में शामिल होने के लिए प्रयासरत है। 11 दिसम्बर 2023 को भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए "विकसित भारत–2047: युवाओं की आवाज" आगाज किया जिसका मुख्य उद्देश्य आजादी के 100वें वर्ष यानी वर्ष 2047 तक भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाना है। विकसित भारत के लिए मुख्य रूप से चार घटकों की पहचान की गई है जिनमें युवा, गरीब, महिलाएँ और अन्नदाता शामिल है को आगे बढ़ाना है।

उद्देश्य

- भारत के विकास की रूपरेखा के बारे में जानकारी प्राप्त करना।
- भारत के सामाजिक–आर्थिक–राजनीतिक तथा तकनीकी विकास की वर्तमान स्थिति जानना।
- एक विकसित देश के लिए आवश्यक क्षमताओं का पता लगाना।

विधितंत्र

यह शोध पत्र द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है। द्वितीयक आंकड़ों का संकलन राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय प्रकाशनों, शोध पत्रों, पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं, समाचार पत्रों तथा इंटरनेट इत्यादि के माध्यमों से की गई है। वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक विधियों से आंकड़ों का विश्लेषण किया गया है।

भारत के आर्थिक विकास की रूपरेखा

भारत का आर्थिक विकास सिंधु घाटी सभ्यता से आरम्भ माना जाता है। सिंधु घाटी सभ्यता की अर्थव्यवस्था मुख्यतः व्यापार पर आधारित प्रतीत होती है। 300 ई.पू. से मौर्य काल ने भारतीय उपमहाद्वीप का एकीकरण किया। राजनीतिक एकीकरण और सैन्य सुरक्षा ने कृषि उत्पादकता में वृद्धि के साथ, व्यापार एवं वाणिज्य से सामान्य आर्थिक प्रणाली को बढ़ावा मिला।

मुगल काल (1526–1858 ई.) के दौरान 16वीं शताब्दी में भारत का सकल घरेलू उत्पाद विश्व अर्थव्यवस्था का लगभग 25.1 प्रतिशत था जो दुनिया में दूसरा सबसे बड़ा अर्थव्यवस्था था।

नीचे नीदरलैंड के ग्रोनिंगन विश्वविद्यालय के एमेरिटस प्रोफेसर और मानद फेलो प्रोफेसर एंगस मैडिसन द्वारा प्रस्तुत आंकड़े दिए गए हैं। कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय ने 1000 वर्षों के लिए विश्व सकल घरेलू उत्पाद के सापेक्ष भारत की संपत्ति का अनुमान लगाया है।

GDP in millions of 1990 International Dollars

Years	1000 AD	1500 AD	1600 AD	1700 AD
India	33,750	60,500	74,250	90,750
China	26,550	61,800	96,000	82,800
West Europe	10,165	44,345	65,955	83,395
World Total	**116.790**	**247,116**	**329,417**	**371,369**

(स्त्रोतः द वर्ल्ड इकॉनमीः ए मिलेनियल पर्स्पेक्टिव)

आर्थिक इतिहासकार अंगस मैडीसन की पुस्तक द वर्ल्ड इकॉनमीः ए मिलेनियल पर्स्पेक्टिव (विश्व अर्थव्यवस्थाः एक हजार वर्ष का परिप्रेक्ष्य) के अनुसार भारत विश्व का सबसे धनी देश था और 17वीं सदी तक दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यस्था था। 18वीं शताब्दी के मध्य में भारत में ब्रिटिश साम्राज्य का विस्तार होना शुरू हुआ। ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के तहत निर्मम शोषण ने भारत की अर्थव्यवस्था को पूरी तरह से तबाह कर दिया।

1947 में औपनिवेशिक शासन से भारत को आजादी मिलने के बाद, अर्थव्यवस्था के पुनर्निर्माण की प्रक्रिया शुरू हुई। भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास के लिए पहली पंचवर्षीय योजना 1952 में लागू हुई जो कृषि प्रधान था। 1951 से 1979 तक, अर्थव्यवस्था स्थिर कीमतों पर लगभग 3.1 प्रतिशत प्रति वर्ष या प्रति व्यक्ति 1.0 प्रतिशत की वार्षिक दर से बढ़ी। इस अवधि के दौरान, उद्योग में औसतन 4.5 प्रतिशत प्रति वर्ष की दर से वृद्धि हुई, जबकि कृषि के लिए वार्षिक औसत 3.0 प्रतिशत था।

1991 में उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण से अर्थव्यवस्था (LPG) में बहुत प्रगति हुई है और सकल घरेलू उत्पाद 6–8 प्रतिशत प्रति वर्ष की दर से बढ़ रहा है। वर्ष 2011–2012 में भारत के शीर्ष पांच व्यापारिक साझेदार चीन, संयुक्त अरब अमीरात, संयुक्त राज्य अमेरिका, सऊदी अरब और स्विटजरलैंड हैं। वर्ष 2011–12 तथा 2023–24 में अर्थव्यवस्था में विभिन्न क्षेत्रों की प्रतिशत हिस्सेदारी नीचे दी गई है।

सकल घरेलू उत्पाद में प्रतिशत हिस्सेदारी

Sectors	Percentage Share in GDP in		
	1950-51	2011-12	2023-24
Primary Sector	59.0	16.1	17.7
Secondary Sector	13.0	24.9	27.6
Tertiary Sector or Service Sector	28.0	59.0	54.7

World Economy: Future Economic Power Shifts (2008-2040)

(% Share of World GDP in PPP)

	2008	2014	2020	2030	2040
Germany	4.2	3.8	3.4	2.8	2.3
USA	20.4	19.2	17.6	15.3	13.9
Japan	6.2	5.6	4.7	3.7	2.9
China	11.3	16.3	22.2	30.9	37.4
India	4.9	6.3	8.5	14.3	20.8

*(**Source:** World Bank for GDP in terms of purchasing power parity in 2008; Projections for 2014-2040 by Mr. Mathew Joseph, Senior Consultant, ICRIER)*

सामाजिक–सांस्कृतिक विकास

हड़प्पा सभ्यता काल में समाज कृषि और व्यापार पर आधारित था। हड़प्पा के लोग प्राकृतिक शक्तियों की पूजा करते थे खासकर पशु पूजा। वैदिक काल के दौरान चार वेदों की रचना हुई। ये वेद हैं– ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद। इन वेदों में धार्मिक अनुष्ठानों तथा सामाजिक मान्यताओं के विवरण मिलते हैं। इसी काल में वर्ण व्यवस्था– ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र की नींव रखी गई जो कर्म और जन्म पर आधारित है तथा समाज को चार वर्गों में विभक्त कर दिया गया। इस काल में समाज में महिलाओं को सम्मान प्राप्त था वे धार्मिक अनुष्ठानों में भाग ले सकती थी। महाजनपद काल के दौरान बौद्ध धर्म और जैन धर्म का उदय हुआ जो धर्म में वर्ण व्यवस्था और यज्ञ–अनुस्ठानों के बढ़ते प्रचलन के खिलाफ थे। गौतम बुद्ध व महावीर ने सामाजिक सुधारो व अहिंसा का संदेश दिया। इसी काल में तक्षशिला व नालंदा जैसे विश्व विख्यात शिक्षा केंद्रों का विकास हुआ जहां पर दर्शन, गणित, खगोल विज्ञान और विज्ञान की पढ़ाई होती थी। मौर्य काल के दौरान चंद्रगुप्त मौर्य और सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म को अपनाया तथा हिंसा और धार्मिक सहिष्णुता का प्रचार किया। शिल्प और स्थापत्य कला के तौर पर अशोक स्तंभ आज भी भारतीय कला का आद्वितीय उदाहरण है। इस काल में कालिदास जैसे महान कवियों का उदय हुआ। आर्यभट्ट और वराहमिहिर जैसे विद्वानों ने गणित, खगोल विज्ञान और चिकित्सा विज्ञान में योगदान दिया। गुप्त काल में कला, विज्ञान और साहित्य का उल्लेखनीय विकास हुआ। इस काल में हिंदू धर्म का पुनर्जागरण हुआ, मंदिरों का निर्माण हुआ, मूर्ति कला का विकास हुआ, हिंदू धार्मिक ग्रंथो का भी विकास हुआ। इन्हीं सब योगदानों के कारण भारत को विश्व गुरू कहा जाता है। मध्यकाल में भारत में इस्लाम का आगमन होता है। इस्लाम के साथ ही सूफी और भक्ति आंदोलन ने भारतीय समाज और संस्कृति पर गहरा प्रभाव डाला। सूफी संतों ने धर्म के नाम पर हो रहे आडंबरों और भेदभाव को समाप्त करने की कोशिश की। कबीर गुरु नानक, संत तुकाराम और मीराबाई ने ईश्वर की भक्ति को प्रमुखता दी और जात–पात के खिलाफ आवाज उठाये। इस काल के दौरान कुतुब मीनार, ताजमहल और लाल किला का निर्माण हुआ।

15वीं शताब्दी में भारत में पुर्तगालियों का आगमन होता है। इस दौरान 1498 में वास्कोडिगामा भारत आते हैं। इसके पश्चात् पुर्तगालियों ने गोवा और केरल में चर्चों की स्थापना करते हैं। ब्रिटिश काल के दौरान भारत में प्रोटेस्टेंट मिशनरी आते हैं जो शिक्षा और स्वास्थ्य के माध्यम से अपना धर्म का प्रचार करते हैं। उन्होंने सामाजिक सुधारों जैसे– शिक्षा, स्वास्थ्य और महिलाओं के अधिकारों के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य कियां खासकर आदिवासियों के लिए। कई प्रतिष्ठित संस्थानों की स्थापना भी की जिसमें सेंट स्टीफन कॉलेज, दिल्ली, सेंट जेवियर कॉलेज, कोलकाता। इन मिशनरियों नें भारत में पहले से चले आ रहे कुरीतियों जैसे – सती प्रथा, बाल विवाह और छुआछूत के खिलाफ आंदोलन भी चलाएं और इन कुरीतियों को समाप्त करने में अपना भूमिका भी दिये।

भारत के सामाजिक–आर्थिक–राजनीतिक तथा तकनीकी विकास की वर्तमान स्थिति

भारत सेवा क्षेत्र में इतना अग्रणी देश है कि इसे 'विश्व का बैंक ऑफिस' कहा जाता है। भारत ने पिछले कुछ वर्षों में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति की है। भारत पहले से ही छोटी कारों और

इंजीनियरिंग वस्तुओं के विनिर्माण का केंद्र बन चुका है। भारत दुनिया में खाद्य और कृषि उत्पादों के लिए सबसे बड़े और सबसे तेजी से बढ़ते बाजारों में से एक है। भारत दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा खाद्य उत्पादक है। भारतीय अर्थव्यवस्था आज दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक है। भारतीय अर्थव्यवस्था के मुख्य इंजन सूचना प्रौद्योगिकी, दूरसंचार, आई.टी.ई.एस, फार्मास्यूटिकल्स, बैंकिंग, बीमा, हल्के इंजीनियरिंग सामान, ऑटो कंपोनेंट, कपड़ा और परिधान, स्टील, मशीन टूल्स और रत्न और आभूषण जैसे क्षेत्र हैं, जो दुनिया भर में तेजी से बढ़ने की संभावना है, जिससे भारतीय उत्पादों और सेवाओं की मांग बढ़ेगी। एक अनुमान के अनुसार, विश्व उत्पादन में भारत की हिस्सेदारी आज के 5 प्रतिशत से बढ़कर 2040 तक 20.8 प्रतिशत हो जाने का अनुमान है।

समाजिक स्थिति

- **जनसंख्याः** 2011 में भारत की आबादी 121 करोड़ के आस–पास थी। 2023 में भारत ने चीन को भी पीछे छोड़ दिया जो जनसंख्या के मामले विश्व में प्रथम स्थान पर था। 2023 में भारत की जनसंख्या 142.8 करोड हो गई है। नीचे दिए गए चित्र से यह स्पष्ट होता है कि 2036 तक भारत की अनुमानित जनसंख्या 152. 2 करोड हो सकती है।
- **साक्षरताः** 2011 के भारतीय जनगणना के अनुसार साक्षरता दर 74.04 प्रतिशत था जिसमें पुरूष साक्षरता दर 82..14 प्रतिशत तथा महिला साक्षरता दर 65.46 प्रतिशत था। विश्व के अन्य देशों जैसे उ. कोरिया (100. 0 प्रतिशत), लाटविया (99.90 प्रतिशत), युक्रेन (99.8 प्रतिशत), पोलैण्ड (99.8 प्रतिशत), मालदीव (99.3 प्रतिशत), रूस (99.7 प्रतिशत) तथा चीन (96.4 प्रतिशत) में उच्च साक्षरता दर देखने को मिलती है।
- **स्वास्थ्यः** भारत में अभी भी स्वास्थ्य संबंधी सेवाओं की कमी है। भारत में ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाले बच्चे व महिलाएं कई गंभीर बीमारियों जैसे टी.बी, मलेरिया, एनीमिया व कुपोषण से ग्रसित रहते हैं। भारत में कुल जी.डी.पी. का 2.1 प्रतिशत है सार्वजनिक स्वास्थ्य पर खर्च किया जाता है जो विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुशंसित 5 प्रतिशत से भी कम है। प्रति हजार व्यक्तियों पर लगभग 0.9 डॉक्टर है जो विश्व स्वास्थ्य संगठन के 1:1000 से भी कम है। कोरोना काल में भारत में टीका का विकास किया गया परन्तु एक बड़ी आबादी को खोना पड़ा।
- **शिशु मत्यु दरः** स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से भारत में शिशु मृत्यु दर (5 वर्ष से कम) निरंतर गिरावट दर्ज हो रही है। 1960 में जहाँ शिशु मृत्यु दर 242 प्रति 1000 था वहीं 2022 तक घटकर 29 प्रति 1000 हो गया है। हालांकि विकसित देशों की तुलना में यह अभी भी बहुत ज्यादा है। मोनाको, आइसलैंड और जापान जैसे देशों में यह 2 प्रति 1000 से भी कम है।
- **बेरोजगारीः** भारत सरकार के श्रम एवं रोजगार मंत्रालय द्वारा जारी किए गए आंकड़ो से पता चलता है कि वित्तीय वर्ष 2020–21 में बेरोजगारी दर 4.2 से 2021–22 में 4.1 तथा 2022–23 में घटकर 3.2 हो गया है।
- **गरीबी एवं कुपोषणः** नीति आयोग के परिचर्चा पत्र के अनुसार भारत में बहुआयामी गरीबी 2013–14 में 29.17 प्रतिशत से घटकर 2022–23 में 11.28 प्रतिशत हो गई है अर्थात् इस अवधि के दौराण लगभग 24. 82 करोड लोग इससे बाहर आये हैं। भारत में कुपोषण की गंभीर स्थिति देखने को मिलती है 5 वर्ष से कम आयु के 35.5 प्रतिशत बच्चे स्टंटिंग के शिकार हैं 19.3 प्रतिशत वेस्टिंग 32.01 प्रतिशत बच्चे अल्प वजन के शिकार हैं जबकि 15 से 49 आयु वर्ग के 18.7 प्रतिशत महिलाओं में कुपोषण की स्थिति देखने को मिलती है।
- **भुखमरीः** 2024 में जारी किए गए वैश्विक भुखमरी सूचकांक में 27.3 अंक के साथ भारत को 105 वां स्थान मिला है जो गंभीर श्रेणी में आता है यह वाकई चिंताजनक है। जारी किए गए आंकड़ों से पता चलता है कि भारत में अभी भी 13.7 प्रतिशत कुपोषित आबादी है। 35.5 प्रतिशत 5 वर्ष से कम ऐसे बच्चे हैं जिनकी हाइट कम है। 18.7 प्रतिशत 5 वर्ष से कम ऐसे बच्चे हैं जिनका वजन कम है तथा 2.9 प्रतिशत 5 वर्ष से कम में से बच्चे हैं जिन्होंने अपनी जान गवां बैठी परन्तु यह भुखमरी सूचकांक बच्चों को अपर्याप्त एवं संतुलित भोजन

न मिलने पर आधारित है। वैसे भारत में लगभग 80 करोड लोगों को मुफत राशन एवं अन्य सुविधाएं प्राप्त होती है।

आर्थिक विकास

- **सकल घरेलू उत्पादः** बजट वित्त वर्ष 2024–25 (नियमित) के लिए GDP 3,26,36,912 करोड़ आंकलित की गई है। वर्तमान समय में भारत आज विश्व की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है और ऐसा अनुमान है कि 2030 तक जर्मनी और जापान जैसे विकसित देशों को छोड़कर भारत विश्व की तीसरी सबसे बड़ी आर्थिक शक्ति बन जाएगा। आईएमएफ के अनुसार भारत की अर्थव्यवस्था 2024 में 7 प्रतिशत और 2025 में 6.5 प्रतिशत की दर से बढ़ेगा।
- **प्रति व्यक्ति आयः** स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से भारत में प्रत्येक वर्ष में प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि हुई है। वित्तीय वर्ष 2022–23 में 1,69,496 (संसोधित) था जबकि वित्तीय वर्ष 2023–24 में 1,84,205 (अनुमानित) था। आर्थिक सर्वेक्षण 2023–24 के आंकड़ों से स्पष्ट होता है है कि भारत के विभिन्न राज्यों में प्रति व्यक्ति आय (2021–22) में काफी अंतर है।
- **मानव विकास सूचकांकः** मानव विकास सूचकांक 2023–24 में भारत 193 देशों में से 134 वें स्थान पर है जिसकी HDI वैल्यू 0.644 है तथा स्विट्जरलैंड सबसे शीर्ष पर है तथा नॉर्वे द्वितीय स्थान पर है। स्वीटजरलैंड की HDI वैल्यू 0.967 है। सूचकांक से स्पष्ट होता है कि विकसित देशों का जीवन प्रत्याशा 80 से ऊपर है जिसमें स्वीट्जरलैंड, नॉर्वे, आइसलैंड, हांगकांग, डेनमार्क, स्वीडन, जर्मनी, आयरलैंड, सिंगापुर, आस्ट्रेलिया, जापान, कनाडा जैसे देश शामिल है जबकि भारत की जीवन प्रत्याशा विकसित देशों की तुलना में बहुत कम 67.7 हीं है तथा विश्व की औसत जीवन प्रत्याशा 72.0 से भी कम है। इस सूचकांक से यह भी पता चलता है की भारत का ग्रॉस नेशनल इनकम 6951 डॉलर है।

राजनीतिक स्थिति

2024 में भारत के अंतर्राष्ट्रीय संबंध उसकी विदेश नीति, वैश्विक भू–राजनीतिक स्थिति, और क्षेत्रीय स्थिरता के संदर्भ में महत्वपूर्ण बने हुए हैं। भारत एक उभरती हुई वैश्विक शक्ति के रूप में खुद को स्थापित कर रहा है और उसके अंतरराष्ट्रीय संबंध चाहे वह संयुक्त राज्य अमेरिका, चीन, रूस, यूरोपीय यूनियन, मध्य पूर्व एशियाई देशों, अफ्रीकी देशों व दक्षिण एशियाई देशों के साथ अच्छे संबंध हैं और बड़े स्तर पर व्यापार हो रहा है। अमेरिका से रक्षा, प्रौद्योगिकी और व्यापारिक सहयोग बढ़ रहा है जबकि रूस से भी रक्षा उपकरणों की खरीद और ऊर्जा क्षेत्र में गहरा सहयोग है। हाल हीं में यूक्रेन युद्ध के बाद रूस पर पश्चिमी देशों के प्रतिबंध के बावजूद भारत ने रूस से तेल आयात करवाया था। यूरोपीय संघ और भारत के बीच व्यापारिक संबंध मजबूत हो रहे हैं, खासकर हरित ऊर्जा और प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों में। भारत की 'पड़ोसी पहले' नीति के तहत दक्षिण एशिया के देशों जैसे नेपाल, बांग्लादेश, भूटान, श्रीलंका आदि के साथ आर्थिक, सांस्कृतिक और रणनीतिक संबंधों को मजबूती दी जा रही है। खाड़ी देशों के साथ भारत के मजबूत संबंध हैं, खासकर ऊर्जा आयात और भारतीय प्रवासियों के मुद्दे पर। सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात और ईरान के साथ भारत के घनिष्ठ आर्थिक और रणनीतिक संबंध बने हुए हैं। 2024 में, भारत G-20 की अध्यक्षता कर चुका है, जहाँ उसने जलवायु परिवर्तन, विकासशील देशों के हित और आर्थिक सुधारों पर जोर दिया। संयुक्त राष्ट्र में भारत एक स्थायी सदस्यता के लिए अपने प्रयासों को जारी रखे हुए है। इन सबके बावजूद पड़ोसी देश पाकिस्तान और चीन के साथ सीमा विवाद को लेकर तनाव बना रहता है।

तकनीकी विकास

भारतीय प्रौद्योगिकी उद्योगः वर्तमान में 250 बिलियन अमेरिकी डॉलर के आँकड़े को पार कर गया है तथा अगले 5 वर्षों में 300–350 बिलियन अमेरिकी डॉलर के राजस्व स्तर तक पहुँचने की उम्मीद है। भारत का दूरसंचार उद्योग विश्व का दूसरा सबसे बड़ा दूरसंचार उद्योग है जो 1.1 बिलियन उपभोक्ता आधार रखता है (फरवरी 2024 में)।

फिनटेक और डिजिटल फाइनेंस: भारत में विश्व के सबसे तेजी से विकास करते वित्तीय प्रौद्योगिकी बाजारों में से एक मौजूद है। 'इंवेस्ट इंडिया' के अनुसार, भारतीय फिनटेक बाजार के वर्ष 2025 तक 150 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुँचने की उम्मीद है। भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) के अनुसार, जून 2023 में कुल डिजिटल भुगतान 2.4 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर दर्ज किया गया।

एडटेक: भारत ई–लर्निंग के लिये अमेरिका के बाद दूसरा सबसे बड़ा बाजार है जिसका बाजार आकार 6 बिलियन अमेरिकी डॉलर का है और वर्ष 2025 तक इसके 10 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक बढ़ने की उम्मीद है।

अंतरिक्ष क्षेत्र: भारतीय अंतरिक्ष क्षेत्र वैश्विक अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था में 2 प्रतिशत – 3 प्रतिशत का योगदान देता है। भारत वर्ष 2030 तक वैश्विक अर्थव्यवस्था में लगभग 10 प्रतिशत की वृहत हिस्सेदारी प्राप्त करने का लक्ष्य रखता है। चंद्रयान–3 और आदित्य– L1 जैसे हाल के सफल मिशनों के साथ भारत अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी क्षेत्र में अग्रणी देश के रूप में उभर रहा है जो वर्ष 2025 तक अपने स्वयं के अंतरिक्ष स्टेशन के निर्माण का लक्ष्य रखता है।

2047 तक एक विकसित भारत होने की संभावनाएँ

भारत के प्रधानमंत्री की 2047 तक भारत को विकसित भारत बनाने की संकल्प चुनौतीपूर्ण हो सकता है किंतु असंभव नहीं। विकसित भारत 2047 के लिए थीम है:

- सशक्त भारतीय (स्वास्थ्य, शिक्षा, नारी शक्ति, खेल, संस्कृति और देखभाल करने वाला समाज)।
- संपन्न और टिकाऊ अर्थव्यवस्था (उद्योग, ऊर्जा, कृषि, बुनियादी ढांचा, सेवाएं, हरित अर्थव्यवस्था, शहर)।
- नवाचार विज्ञान और प्रौद्योगिकी (अनुसंधान एवं विकास, डिजिटल, स्टार्टअप)।
- सुशासन और सुरक्षा।
- विश्व में भारत की स्थिति में सुधार।

भारत के वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने अंतरिम बजट 2024 में 2047 तक विकसित भारत के लिए नरेंद्र मोदी के विजन को आगे बढ़ाने के लिए सर्वव्यापी, सर्वांगीण और सर्वसमावेशी विकास की दिशा में कार्य कर रही है। भारत सरकार भारत को विकसित बनाने के लिए चार प्रमुख समूह पर कार्य कर रहे हैं:

गरीब, महिलाएँ, युवा और अन्नदाता। इन चारों को विकसित भारत का स्तंभ भी माना गया है। अंतरिम बजट 2024 में मुख्य रूप से 9 प्राथमिकताओं पर जोर दिया गया है जिसमें शामिल है–

- कृषि में उत्पादकता और लचीलापन,
- रोजगार और कौशल,
- समावेशी मानव संसाधन विकास और सामाजिक न्याय,
- विनिर्माण और सेवाएं,
- शहरी विकास,
- ऊर्जा सुरक्षा,
- बुनियादी ढांचा,
- नवाचार अनुसंधान और विकास तथा
- अगली पीढ़ी के सुधार।

जी.डी.पी.: निति आयोग ने कहा है कि भारत की वर्तमान जीडीपी 3.36 ट्रिलियन डॉलर है, जिसे 9 गुना बढ़ाकर 30 ट्रिलियन डॉलर करना होगा। भारत को एक विकसित देश बनने के लिए अगले 20–30 साल तक लगातार 7–10 प्रतिशत की दर से बढ़ने की जरूरत है।

प्रति व्यक्ति आय: देश की प्रति व्यक्ति आय को मौजूदा 2,392 डॉलर से बढ़ाकर 8 गुना यानी 18,000 डॉलर सालाना करना होगा।

शिक्षा क्षेत्रः वैश्विक शिक्षा क्षेत्र में भारत का महत्वपूर्ण स्थान है। उच्च शिक्षण संस्थानों का दुनिया का सबसे बड़ा नेटवर्क भारत में है। भारत की लगभग 26 प्रतिशत आबादी 0–14 वर्ष की आयु वर्ग में है, इसलिए भारत का शिक्षा क्षेत्र विकास के लिए कई अवसर प्रदान करता है।

वित्त वर्ष 25 में (29 जुलाई, 2024 तक) भारत में कॉलेजों की संख्या 50,577 तथा विश्वविद्यालयों की संख्या 1,284 है। वित्त वर्ष 22 में, भारतीय उच्च शिक्षा में सकल नामांकन अनुपात (GER) 28.4 प्रतिशत था जिसे 2035 तक 50 प्रतिशत तक ले जाने का लक्ष्य है। विकसित देशों में उच्च शिक्षा में सकल नामांकन अनुपात 80 प्रतिशत से उपर है। शिक्षा मंत्रालय के अनुसार उच्चतर माध्यमिक में सकल नामांकन अनुपात में वर्ष 2021–22 में 57.6 प्रतिशत है। टाइम्स हायर एजुकेशन यूनिवर्सिटी रैंकिंग 2024 में भारत ने चीन को पीछे छोड़ते हुए चौथे सबसे अधिक विश्वविद्यालयों का स्थान प्राप्त किया है। केंद्र सरकार ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और बजट घोषणा 2022–23 के अनुरूप वयस्क शिक्षा के सभी पहलुओं को कवर करने के लिए वित्त वर्ष 22–27 की अवधि के लिए "न्यू इंडिया साक्षरता कार्यक्रम" को मंजूरी दी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में रोजगार परक पाठ्यक्रमों के शामिल हो जाने से 'स्किल इंडिया' का मिशन पुरा होगा।

स्वास्थ्यः हर घर को स्वास्थ्य सुविधा से जोड़ना होगा। प्रत्येक भारतीय को पता होना चाहिए कि स्वास्थ्य संबंधी समस्या होने पर किससे संपर्क करना है और ऐसे मेडिकल रिकॉर्ड बनाना होगा जो गोपनीयता का सम्मान करता हों और केवल मरीजों के हित में हों जैसा कि तमिलनाडु मेडिकल सर्विसेज कॉरपोरेशन (टी.एन.एम.एस.सी) ने किया है।

पोषणः स्थानीय सरकारों को किशोर लड़कियों, गर्भवती महिलाओं और शिशुओं में अल्पपोषण की माप, पहचान और अनुवर्ती कार्रवाई की जिम्मेदारी लेनी चाहिए। स्वच्छ पानी, स्वच्छता, सामुदायिक कार्यकर्ताओं के साथ बुनियादी दवाओं की उपलब्धता, विविध भोजन सेवन, स्कूलों में पोषक उद्यान, दूध और अंडे, तेल और हरी पत्तेदार सब्जियों तक पहुंच जैसे व्यापक निर्धारकों का एक साथ समन्वय और अभिसरण सुनिश्चित किया जाता है।

गरीबी उन्मूलनः एक अन्य क्षेत्र जिस पर भारत सरकार को जिम्मेदार होना चाहिए वह है देश के सभी हिस्सों से गरीबी उन्मूलन। 20वीं सदी में भी देश के विभिन्न हिस्सों में बड़े पैमाने पर गरीबी व्याप्त है जो कई क्षेत्रों पर नकारात्मक प्रभाव डालती है।

जनसांख्यिकीय लाभांश का राष्ट्र निर्माण में सहयोग

भारत में 62 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या की आयु 15–59 वर्ष के बीच है तथा जनसंख्या की औसत आयु 30 वर्ष से कम है। वर्तमान समय में भारत में जनसंख्या की आयु संरचना के आधार पर आर्थिक विकास की क्षमता का प्रतिनिधित्व करने वाले 'जनसांख्यिकीय लाभांश' के चरण से गुजर रहा है। हालाँकि इस क्षमता को वास्तविकता में बदलने के लिये किशोरों और युवा को स्वस्थ एवं सुशिक्षित होना आवश्यक है। संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष (UNFPA) द्वारा भारत में जनसांख्यिकीय लाभांश पर एक अध्ययन में कहा गया है कि भारत में जनसांख्यिकीय लाभांश का अवसर वर्ष 2005–06 से वर्ष 2055–56 तक 5 दशकों के लिये उपलब्ध है।

भारत की विशाल युवा जनसंख्या उत्पादक श्रमबल के रूप में देश की ळक्च् वृद्धि में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। स्टार्टअप, कृषि, सेवा क्षेत्र, मैन्युफैक्चरिंग आदि में युवा उद्यमियों और श्रमिकों की भागीदारी से देश की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होती है। उदाहरणस्वरूप, ''मेक इन इंडिया'', ''स्टार्टअप इंडिया'' जैसी योजनाएँ युवाओं को उत्पादन और नवाचार की ओर प्रोत्साहित करती हैं।

कृषक वर्ग का समूचित विकास

भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहाँ लगभग 55 प्रतिशत जनसंख्या कृषि पर निर्भर है। यदि भारत को 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाना है, तो कृषक वर्ग यानी किसानों का समुचित (सम्पूर्ण व संतुलित) विकास अत्यंत आवश्यक है। कृषक वर्ग का समूचित विकास से तात्पर्य केवल कृषि उत्पादन बढ़ाने से नहीं है, बल्कि किसानों की आय में

वृद्धि, शिक्षा, स्वास्थ्य व सामाजिक सुरक्षा का विस्तार, कृषि तकनीक, सिंचाई, बीमा और विपणन सुविधाओं की उपलब्धता तथा कृषक सम्मान और सशक्तिकरण से है। सरकार, समाज और निजी क्षेत्र को मिलकर कृषक वर्ग के जीवन स्तर को ऊँचा उठाना होगा, तभी भारत एक समावेशी, आत्मनिर्भर और टिकाऊ विकास वाला राष्ट्र बन सकेगा।

फार्मास्युटिकल उद्योग: अक्सर दुनिया की फार्मेसी के रूप में प्रतिष्ठित, भारतीय फार्मास्युटिकल उद्योग फल–फूल रहा है। घरेलू मांग को पूरा करने के अलावा, भारतीय फार्मा उद्योग वैश्विक फार्मा आपूर्ति श्रृंखला के 20 प्रतिशत से अधिक पर कब्जा करता है और लगभग संबोधित करता है। यह अमेरिका में जेनेरिक मांग का 40 प्रतिशत पूरा करता है और यू.के. में सभी दवाओं का एक चौथाई प्रदान करता है। दिलचस्प बात यह है कि भारत 50.60 प्रतिशत से अधिक की हिस्सेदारी के साथ यूनेस्को में सबसे बड़ा योगदानकर्ता है। भारतीय फार्मास्युटिकल उद्योग के प्रमुख क्षेत्रों में जेनेरिक दवाएं, ओटीसी दवाएं, थोक दवाएं, टीके, अनुबंध अनुसंधान और विनिर्माण, बायोसिमिलर और बायोलॉजिक्स शामिल हैं। यह उम्मीद की जाती है कि फार्मा सेक्टर 2024 तक 65 अरब डॉलर और 2030 तक 120 अरब डॉलर तक पहुंचने की संभावना है तथा अनुमान है कि 2047 तक 450 अरब डॉलर तक पहुंच जाएगा। इस क्षेत्र में विकास को बनाए रखने के लिए, सरकार ने अनुसंधान और नवाचार को आगे बढ़ाने के लिए कई कदम उठाए हैं।

जस्ट ट्रांजिसन: भारत में विश्व औसत की तुलना में कार्बन स्रोतों से अधिक विद्युत उत्पादन होता है प्राथमिक ऊर्जा स्रोतों में लगभग कोयले का योगदान 44 प्रतिशत है तथा विद्युत वितरण में इसका हिस्सा 70 प्रतिशत है। भारत में 91,000 मेगावाट की नई प्रस्तावित कोयला क्षमता पर चल रहा है जो चीन से के बाद दूसरे स्थान पर है। COP 26 में भारत ने घोषणा किया कि 2070 तक नेट जीरो का लक्ष्य है। कार्बन उत्सर्जन को कम करने हेतु भारत गैर नवीकरणीय ऊर्जा से नवीकरणीय ऊर्जा की दिशा में कार्य कर रहा है। 2047 तक भारत के उर्जा के मामले में आत्मनिर्भर हो जाएगा।

उर्जा क्षेत्र की स्थिति एवं प्रगति

भारत विश्व का तीसरा सबसे बड़ा उर्जा उपभोग करने वाला देश है। कोयला देश की कुल उर्जा जरूरतों का 50 से अधिक आपूर्ति करता है लेकिन अब गैर जीवाश्म ईंधनों की तरफ अग्रसर है। भारत ने COP- 26 में 2030 तक 500 गीगावॉट गैर जीवाश्म ईंधन आधारित ऊर्जा का एक बड़ा हुआ लक्ष्य निर्धारित किया है साथ हीं 2070 तक शुद्ध शून्य उत्सर्जन का लक्ष्य भी रखा है। इस दिशा में भारत में लिथियम के भंडार का पता लगना उर्जा के क्षेत्र में लाभदायक सिद्ध होगा।

लिथियम के भंडार: लिथियम एक तरह का खनिज है जिसका इस्तेमाल इलेक्ट्रिक गाड़ियों, मोबाइल फोन और लैपटॉप में लगने वाले बैटरियों में किया जाता है। भारत सरकार के अनुसार जियोलॉजिकल सर्वे आफ इंडिया को जम्मू कश्मीर के रियासी जिले में लिथियम के 59 लाख टन के विशाल भंडार का पता चला है। इससे पूर्व 2021 में कर्नाटक में भी इसके भंडार का पता चला था। ऐसा माना जाता है कि डीजल और पेट्रोल गाडियां से होने वाला प्रदूषण कम करने में यह भंडार भारत के लिए बेहद ही महत्वपूर्ण है खासकर कार्बन उत्सर्जन को कम करने में सहायता मिलेगी। भारत सरकार के अनुसार 2030 तक इलेक्ट्रिक गाड़ियों के निर्माण में 30 प्रतिशत तक बढ़ोतरी हो सकती है।

महिला सशक्तिकरण: महिलाओं को शिक्षा के अवसर उपलब्ध कराना सबसे महत्वपूर्ण कदम है। शिक्षा उन्हें आत्मनिर्भर बनने और अपने अधिकारों को समझने में मदद करती है। इसके साथ हीं महिलाओं को कौशल विकास, स्वरोजगार और उद्यमिता, वित्तीय साक्षरता, कार्यस्थल पर समानता, नेतृत्व और निर्णय में भागीदारी सुनिश्चित करना होगा। ग्लोबल जेंडर गैप रिपोर्ट 2023 के अनुसार भारत में कार्यस्थल से महिलाएँ गायब हो रही है जो भारत के लिए बहुत ही चिंता का विषय है। इस रैंकिंग में भारत को 146 देशों में से 127 वां स्थान मिला था।

सॉफ्ट पावर (Soft Power): सॉफ्ट पावर के माध्यम से देश अपने सांस्कृतिक, सामाजिक, और कूटनीतिक संसाधनों का उपयोग करके दुनिया पर बिना बल या सैन्य दबाव के सकारात्मक प्रभाव डालता है। भारत के

लोकतांत्रिक सिद्धांत और नागरिक अधिकारों का सम्मान अन्य देशों के लिए एक उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। शीत युद्ध के दौरान भारत की गुटनिरपेक्ष नीति ने उसे एक वैश्विक नेता के रूप में स्थापित किया। भारत का वसुधैव कुटुंबकम (पूरी दुनिया एक परिवार है), वैज्ञानिक और तकनीकी योगदान, कोविड–19 वैक्सीन डिप्लोमेसी, मानवीय सहायता और विकास सहयोग तथा जलवायु परिवर्तन जैसी वैश्विक चुनौतियों पर भारत की सक्रियता उसकी सॉफ्ट पावर को बढ़ाती है। भारत ने अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (International Solar Alliance) जैसे संगठनों की स्थापना की है, जो जलवायु परिवर्तन से निपटने में सहयोगात्मक प्रयासों का प्रतीक है।

तकनीक में निवेशः भारत अन्य देशों के साथ सहयोग करके अपने विज्ञान और प्रौद्योगिकी क्षेत्र को विकसित करने की दिशा में आगे बढ़ने की योजना बना रहा है। भारत के पास 45 से अधिक देशों के साथ सहयोग के सक्रिय द्विपक्षीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी कार्यक्रम हैं, जिनमें अफ्रीका, आसियान, ब्रिक्स, यूरोपीय संघ और पड़ोसी देशों के लिए समर्पित कार्यक्रम शामिल हैं। भारत खुद को औद्योगिकीकरण और तकनीकी विकास में अग्रणी के रूप में स्थापित करने की दिशा में आक्रामक रूप से काम कर रहा है।

भारत में डिजिटल नवाचार को गति देने के लिए नीति आयोग, अमेजन वेब सर्विसेज और इंटेल ने मिलकर एक नया अनुभव स्टूडियो विकसित किया है, ताकि सरकारी हितधारकों, स्टार्ट–अप, उद्यमों और उद्योग विशेषज्ञों के बीच समस्या समाधान और नवाचार को बढ़ावा दिया जा सके। नया अनुभव स्टूडियो सार्वजनिक क्षेत्र में उनके उपयोग को बढ़ाने के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीन लर्निंग, इंटरनेट ऑफ थिंग्स, संवर्धित वास्तविकता, आभासी वास्तविकता, ब्लॉकचेन और रोबोटिक्स जैसी तकनीकों का उपयोग करेगा।

अंतरिक्ष क्षेत्रः पिछले कुछ वर्षों में, अंतरिक्ष क्षेत्र ने अंतरिक्ष अन्वेषण और जमीनी बुनियादी ढांचे के लिए उपयोग किए जाने वाले रॉकेट, उपग्रहों और अंतरिक्ष यान के निर्माण में उल्लेखनीय प्रगति देखी है। है। वर्तमान में, भारत के पास 55 सक्रिय अंतरिक्ष संपत्तियां हैं जिनमें 18 संचार उपग्रह, नौ नेविगेशन उपग्रह, पांच वैज्ञानिक उपग्रह, तीन मौसम विज्ञान उपग्रह और 20 पृथ्वी अवलोकन उपग्रह शामिल हैं। इसरो ने मौजूदा लॉन्च वाहनों पोलर सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल (PSLV) और जियोसिंक्रोनस सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल (GSLV) के अलावे अपने बेड़े में दो और लॉन्च व्हीकल मार्क –3 (स्टड3) और स्मॉल सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल (SSLV) जोड़े हैं।

अंतरिक्ष अन्वेषण मिशनों में मार्स ऑर्बिटर मिशन (2014), एस्ट्रोसैट (2015), चंद्रयान–2 ऑर्बिटर (2019) और उसके बाद, चंद्रयान–3 का चंद्रमा पर उतरना (2023) और आदित्य – एल 1 मिशन (2023)। इसके अलावा, स्वदेशी उपग्रह नेविगेशन तारामंडल यानी, छंअपब् श्रृंखला 2016 में पूरी हो गई और चालू हो गई। न्यू स्पेस इंडिया लिमिटेड (NSIL) ने LVM3, M2 और M3 मिशनों के माध्यम से वनवेब के 72 उपग्रहों को कम पृथ्वी की कक्षा में लॉन्च करने के अपने अनुबंध को सफलतापूर्वक निष्पादित किया है।

विभिन्न उत्पादों का आयात–निर्यात

निर्यात के क्षेत्र मेंः DGCI-S द्वारा प्रकाशित आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि वित्त वर्ष 2022–23 में 36,21,550 करोड रूपए का निर्यात हुआ था जबकि 57,49,801 करोड रूपए का आयात हुआ था। आयात और निर्यात के बीच का अंतर 21,58,251 करोड़ रूपए का है अर्थात् भारत वस्तुओं के निर्यात करने से ज्यादा आयात करता है।

खाद्यान्नों का उत्पादन और निर्यातः जनसंख्या की दृष्टि से भारत संसार का सबसे बड़ा देश है अतः खाद्यान्न की बड़ी मात्रा में उपलब्धि जरूरी है यहां 2022 में खाद्यान्न उत्पादन 329.7 मिलियन टन के सर्वकालिक उच्च स्तर पर पहुंच गया और तिलहन उत्पादन 41.4 मिलियन टन तक पहुंच गया। भारत दूध का सबसे बड़ा उत्पादक और फलों सब्जियों और चीनी का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है। भारत दुनिया के सबसे बड़े कृषि उत्पादन निर्यातकों में से एक है। अप्रैल से जनवरी 2024 में कृषि उत्पादन के निर्यात का कुल मूली 38.65 बिलियन अमेरिकी डॉलर था।

रक्षा निर्यातः ''क्षमा शोभती उस भुजंग को जिसके पास गरल हो, उसको क्या जो दंतहीन, विषरहित, विनीत, सरल हो''। भारत का रक्षा उत्पादन वित्त वर्ष 2017 में घ74,054 करोड़ से बढ़कर वर्ष 23 में 108,684 करोड़ हो गया

जिससे रक्षा निर्यात को बढ़ावा मिला। 2015 और 2019 के बीच, भारत ने दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा हथियार आयातक होने का गौरव हासिल किया। भारत हथियार आयातक से आगे बढ़कर शीर्ष 25 हथियार निर्यातक देशों की सूची में शामिल हो गया है। इसके अलावा, रक्षा निर्यातकों को जारी किए गए निर्यात प्राधिकरणों की संख्या में भी वृद्धि हुई है।

डोर्नियर–228 जैसे विमान, तोपखाने की बंदूकें, ब्रह्मोस मिसाइलें, पिनाका रॉकेट और लॉन्चर, रडार, सिमुलेटर और बख्तरबंद वाहन जैसे रक्षा उत्पादों और उपकरणों की एक विस्तृत श्रृंखला का निर्यात करता है। आत्मनिर्भर भारत पहल ने रक्षा उपकरणों के स्वदेशी डिजाइन, विकास और निर्माण को प्रोत्साहित करके देश की मदद की है, जिससे लंबे समय में आयात पर निर्भरता कम हो गई है। इस प्रकार कह सकते हैं कि भारत रक्षा निर्यात में द्रुत गति से आगे बढ़ रहा है।

फुटवियर निर्यातः भारत फुटवियर का दूसरा सबसे बड़ा वैश्विक उत्पादक है। भारतीय फुटवियर बाजार, जिसका मूल्य 26 बिलियन अमेरिकी डॉलर है 2030 तक 590 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंचने की उम्मीद है।

स्मार्टफोन निर्यातः भारत का घरेलू उत्पादन और स्मार्टफोन का निर्यात लगातार बढ़ रहा है, विशेष रूप से 2020 में प्रोडक्शन लिंक्ड इंसेंटिव योजना के लॉन्च के बाद से महत्वपूर्ण बदलाव हुए हैं। वित्त वर्ष 20 में पहली बार घरेलू उत्पादन घरेलू मांग से अधिक हो गया, और स्मार्टफोन भारत शीर्ष निर्यात श्रेणियों में से एक बन गई। वित्त वर्ष 2014 में निर्यात में 42.2 प्रतिशत की वृद्धि (साल–दर–साल आधार पर) ने स्मार्टफोन को छह अंकीय एच. एस. उत्पाद श्रेणियों में भारत के शीर्ष पांच निर्यात वस्तुओं में शुमार करने में सक्षम बनाया।

कपड़ा उद्योगः भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा कपड़ा निर्माता और शीर्ष पांच निर्यातक देशों में से एक है। FY24 में, हस्तशिल्प सहित कपड़ा और परिधान का निर्यात रूपये 2.97 लाख करोड़ तक पहुंच गया।

आयात के क्षेत्र में

भारत मुख्यतः निम्न उत्पादों का आयात करवाता हैः

पेट्रोलियम, सोना, मोती, कीमती पत्थर तथा हीरा, इलेक्ट्रॉनिक मशीन और उपकरण, परमाणु रिएक्टर और मशीनरी, खनिज अयस्क और धातु, लोहा और इस्पात, चिकित्सा, शल्य चिकित्सा और फार्मास्युटिकल उत्पाद तथा प्लास्टिक और सामान इत्यादि।

तेल खपत के मामले में भारत, अमेरिका और चीन के बाद दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा देश है। भारत अपनी जरूरत का 80 फीसदी तेल आयात करता है। साल 2021 में भारत में रूस से 1 करोड़ 20 लाख बैरल तेल आयात किया था जो की कुल आयात का महज 2 प्रतिशत था।

निष्कर्ष

भारत को 2047 तक 'विकसित भारत 2047' लक्ष्य को हासिल करने के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, बुनियादी ढांचे, शासन और नवाचार के क्षेत्र में निरंतर प्रयासों की आवश्यकता होगी। मानव संसाधन को सशक्त बनाकर, डिजिटल और भौतिक बुनियादी ढांचे को बेहतर बनाकर, उद्यमिता और वैज्ञानिक अनुसंधान को प्रोत्साहित करके, और पर्यावरण संरक्षण को ध्यान में रखते हुए, भारत वैश्विक स्तर पर एक मजबूत राष्ट्र बन सकता है। सामाजिक असमानताओं को दूर करना, हाशिए पर रहने वाले समुदायों को सशक्त बनाना, और सतत विकास को बढ़ावा देना इस दृष्टिकोण को सभी के लिए समावेशी और न्यायपूर्ण बनाने के लिए आवश्यक है।

'विकसित भारत 2047' का मार्ग सरकार, निजी क्षेत्र, नागरिक समाज और भारतीय जनमानस के संयुक्त प्रयासों से ही संभव होगा। भारत की विविधता को अपनाते हुए और अपने युवा जनसंख्या के लाभ का उपयोग करते हुए, यह दीर्घकालिक दृष्टि न केवल प्रेरणादायक है, बल्कि इसे प्राप्त किया जा सकता है। 2047 में जब भारत अपनी स्वतंत्रता की शताब्दी मनाएगा, तब यह विकास, शांति, और समृद्धि का एक प्रमुख केंद्र बनकर उभरने की पूरी क्षमता रखता है। इस प्रकार अंत में यह कहा जा सकता है कि 2047 तक भारत को विकसित भारत बनाने की संकल्प

चूनौतिपूर्ण हो सकता है किंतु असंभव नहीं।

संदर्भ सूची

1. Bano, T., & Varghese, A. (2023). Viksit Bharat Sankalp Yatra: The Health Perspective. *Indian Journal of Community Health*, 35(4), 389-391.
2. कौशिक एस.डी.; एवं रावत डी.एस (2019) *भौगोलिक विचारणाराएँ एवं विधितंत्र,* रस्तोगी प्रकाशन, मेरठ, पृ. 20–25।
3. https://cbhidghs.mohfw.gov.in/WriteReadData/l892s/Chapter%206.pdf, Accessed on 02/09/2024.
4. https://data.worldbank.org/indicator/SE.XPD.TOTL.GD.ZS?locations=IN, Accessed on 02/09/2024.
5. https://data.worldbank.org/indicator/SH.DYN.MORT?locations=IN, Accessed on 15/10/2024.
6. https://en.m.wikipedia.org/wiki/List_of_Indian_states_and_union_territories_by_GDP_per_capita, Accessed on 22/09/2024.
7. https://forumias.com/blog/india-as-a-developed-nation/, Accessed on 12/11/2024.
8. https://gfmag.com/data/economic-data/world-unemployment-rates/, Accessed on 09/10/2024.
9. https://hdr.undp.org/content/human-development-report-2023-24, Accessed on 28/10/2024.
10. https://hindi.business-standard.com/economy/india-will-have-to-travel-a-journey-of-75-years-to-become-a-developed-country-world-bank-report-id-360201#, Accessed on 13/11/2024.
11. https://indianexpress.com/article/opinion/columns/in-viksit-bharat-what-does-viksit-mean-9304442/, Accessed on 19/10/2024.
12. https://indianexpress.com/subscribe/campaign-3/?utm_source=facebook&utm_medium=paid&utm_campaign=digital_only&fbclid=PAZXh0bgNhZW0BMAABpkgHathE7HmxJrkdUM7ctH-Ve1m8jiP_sAZd2gYqiQLb_mIUPYC-zoLALw_aem_z1GViCwFw0fGe4rwOe3tSg, Accessed on 02/09/2024.
13. https://pib.gov.in/PressReleaseIframePage.aspx?PRID=1945144, Accessed on 18/10/2024.
14. https://pib.gov.in/PressReleaseIframePage.aspx?PRID=2035278, Accessed on 15/10/2024.
15. https://www.bbc.com/hindi/india-64597534, Accessed on 02/09/2024.
16. https://www.britannica.com/place/India/Society-and-culture, Accessed on 11/09/2024.
17. https://www.business-standard.com/opinion/columns/to-be-a-developed-nation-by-2047-india-needs-to-change-a-range-of-policies-123111400706_1.html, Accessed on 22/10/2024.
18. https://www.cheggindia.com/general-knowledge/nizam-of-hyderabad/, Accessed on 28/09/2024.
19. https://www.drishtiias.com/daily-news-editorials/budget-and-education, Accessed on 09/11/2024.
20. https://www.drishtiias.com/hindi/daily-updates/daily-news-analysis/world-development-report-2024, Accessed on 03/11/2024.
21. https://www.drishtiias.com/hindi/daily-updates/daily-news-editorials/india-s-tech-trajectory#, Accessed on 09/11/2024.
22. https://www.globalhungerindex.org/ranking.html, Accessed on 23/10/2024.
23. https://www.google.com/amp/s/www.thehindu.com/news/national/over-248-crore-people-moved-out-of-multidimensional-poverty-in-india-in-nine-years-niti-report/article67743089.ece/amp/, Accessed on 06/10/2024.

24. https://www.ibef.org/industry/education-presentation, Accessed on 02/09/2024.

25. https://www.imf.org/external/datamapper/LUR@WEO/OEMDC/ADVEC/WEOWORLD, Accessed on 09/10/2024.

26. https://www.indiabudget.gov.in/economicsurvey/, Accessed on 28/10/2024.

27. https://www.investindia.gov.in/team-india-blogs/pharmaceutical-sector-spotlight-driving-innovation-india, Accessed on 09/11/2024.

28. https://www.jagran.com/business/biz-india-economy-2024-set-to-outpace-the-us-and-china-with-fastest-growth-23795768.html, Accessed on 05/10/2024.

29. https://www.jansatta.com/national/blog-challenges-obstacles-strategies-necessary-reforms-path-developed-india-2047/3564540/, Accessed on 02/09/2024.

30. https://www.jansatta.com/politics/technology-and-dream-of-a-developed-india/2558268/, Accessed on 09/09/2024.

31. https://www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles/PMC6465866/, Accessed on 03/09/2024.

32. https://www.netexplanations.com/essay-on-stepping-into-2047how-india-will-become-a-developed-nation/, Accessed on 22/10/2024.

33. https://www.nextias.com/ca/current-affairs/18-08-2022/india-as-a-developed-nation-by-2047, Accessed on 02/09/2024.

34. https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1873307, Accessed on 03/11/2024.

35. https://www.researchgate.net/publication/303311897_Health_infrastructure_in_India_present_challenges_and_future_prospects, Accessed on 03/09/2024.

36. Khullar, D.R.(2023) *India: A Comprehensive Geography,* Kalyani Publishers, New Delhi, p. 4.

37. Padder, A. H. (2023) Viksit Bharat@ 2047, ResearchGate, Retrieved, from https://www. researchgate. net/publication/37667936, Accessed on 23/10/2024.

——==00==——